अ नु क्र म णि का

	पृष्ठांक	पृष्ठांक
अध्याय : 1		1 - 22
विषय-प्रवेश		
भूमिका		
मूल्य : व्युत्पत्तिमूलक अर्थ, अर्थविस्तार, मूल्य-परिभाषा, मूल्य अवधारणा, मूल्य-निर्माण, मूल्य-भेद।		
1· व्यक्तिवादी एवं अस्तित्ववादी जीवन-मूल्य		
2· पारिवारिक जीवन-मूल्य		
3· सामाजिक जीवन-मूल्य		
4· आर्थिक जीवन-मूल्य		
5· राजनीतिक जीवन-मूल्य		
6· सांस्कृतिक जीवन-मूल्य		
परिवर्तन : मूल्य-परिवर्तन, मूल्य-संक्रमण, मूल्य-विघटन, मूल्य-परिवर्तन के कारण, मूल्य परिवर्तन की दिशाएँ, उपन्यास विधा में जीवन-मूल्यों का अंकन।		
परिवर्तित जीवन-मूल्यों का चित्रण क्यों ? दिशा-संकेत		
निष्कर्ष		
अध्याय : 2		23-44
दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों का सामान्य परिचय		
भूमिका		
दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में अवधारणा		
"प्रिया" कथ्यचेतना : नारी का पुरूष द्वारा दैहिक और मानसिक शोषण, सुशिक्षित और कामकाजी नारी की विवाह के प्रति नफरत, सौदामिनी, पति के शोषण का धिक्कार और आत्मनिर्भता का स्वीकार, यशवंत : पत्नी		

और पुत्री की देह का विक्रेता, चित्रा : अंधे प्रेम की शिकार, देवदास : अभिशप्त निर्धनता, डॉ॰मनसिज : हवस का पुजारी,

"कोहरे" कथ्यचेतना : दाम्पत्य सम्बन्धों के बीच कोहरे भरी स्थिति, सिमी : वैयक्तिक अस्तित्व के लिए विवाह-विच्छेद, सुनील : स्वच्छन्द जीवन के प्रति आसक्त मेजर सिन्हा : पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित, श्यामा : यथार्थता से आधुनिकता की ओर झुकाव

"प्रतिध्वनियाँ" कथ्यचेतना : वैवाहिक जीवन की असंगतियों का लेखा-जोखा, नीलकान्त : राजनीतिक नेता और लेडि-कीलर, अचला : वैवाहिक मूल्यों को तिलांजलि और विवाहपूर्व प्रेमी का स्वीकार,

निष्कर्ष

अध्याय : 3 45-78

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित व्यक्तिवादी एवं अस्तित्वबोधपरक जीवन-मूल्य

भूमिका

व्यक्तिवाद : अर्थबोध, व्यक्तिवाद का उद्‌भव और विकास, व्यक्तिवाद का परिपोषक अस्तित्ववाद।

अस्तित्व-बोध और अस्तित्ववाद, अस्तित्व : अर्थबोध, अस्तित्ववाद का उद्‌भव और विकास, अस्तित्ववादी चिन्तन में ईश्वरीय-अनीश्वरीय बोध

1॰ ईश्वरीय अस्तित्व-बोध 2॰ अनीश्वरीय अस्तित्व-बोध

3॰ वैयक्तिक अस्तित्व-बोध 4॰ स्वतंत्रता और चयन-बोध

5॰ परिवेश पीड़ा और आत्मबोध

क्षण-बोध, भीतरी संघर्ष, संत्रास, निराशा, व्यथा, अलगाव-बोध, पति-पत्नी संबंधों में अलगाव, माता-पिता से अलगाव, अकेलापन,

निष्कर्ष

पृष्ठांक

अध्याय : 4

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित पारिवारिक, सामाजिक तथा अन्य जीवन-मूल्य 79-114

भूमिका

परिवार शब्द की व्युत्पत्ति : अर्थ और परिभाषा

विवाह-पूर्व प्रेम और यौन-सम्बन्ध

विवाहोत्तर प्रेम और यौन-सम्बन्ध, अर्थासक्ति के कारण

परिवर्तित जीवन-मूल्य, विवाह सम्बन्धि नयी दृष्टि,

दाम्पत्य सम्बन्धों में परिवर्तन, राजनीतिक जीवन-मूल्यों में नये प्रतिमान,

सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों में नये प्रतिमान, धार्मिक जीवन-मूल्यों में नये

प्रतिमान, पारिवारिक नैतिकता के नये प्रतिमान, अनमेल विवाह,

त्रिकोणमिती जीवन, पिता-पुत्र सम्बन्ध, मातृत्व नव्य-बोध, विधवा नारी

की मातृत्व कामना, वैज्ञानिक प्रगति के प्रति नयी दृष्टि

निष्कर्ष

अध्याय : 5 115-135

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित जीवन-मूल्यों की अभिव्यक्ति के विविध आयाम

भूमिका

उपन्यासकार और उपन्यास कला

उपन्यास लेखन की विविध प्रणालियाँ : 1·वर्णनात्मक प्रणाली,
2·मनोवैज्ञानिक प्रणाली, 3·खण्डित व्यक्तित्व प्रणाली, 4· आत्मकथनात्मक प्रणाली

कथोपकथन प्रणाली : 1·नाटकीय कथोपकथन प्रणाली, 2·मनोवैज्ञानिक
कथोपकथन प्रणाली, 3·तार्किक कथोपकथन प्रणाली, 4·पत्रात्मक प्रणाली

पृष्ठांक

काव्यात्मक प्रणाली

प्रतिकात्मक प्रणाली, भावात्मकता, व्यंग्यात्मकता, आँचलिकता, पूर्व दीप्ति शैली

शब्दसौष्ठव, परिष्कृत शब्दावली, संस्कृत शब्दावली, अंग्रेजी शब्दावली,

कहावतें मुहावरे इ.

निष्कर्ष

अध्याय : 6 136-141

समन्वित-मूल्यांकन

संदर्भ-ग्रंथ-सूची 142-145